

**शीर्षक:-**फसल का विविधिकरण उत्पादन स्थिरता व उच्च भूमि उपयोग दक्षता के लिए

धान-गेहूँ जम्मू और कश्मीर के सिंचित क्षेत्र की लोकप्रिय फसल प्रणाली है । चूंकि धान और गेहूँ की दोनो फसलें प्रकृति में व्यापक है और इन फसलों की लगातार खेती करने से मृदा में पोषक तत्वों की कमी हो रही है जिसके परिणामस्वरूप इन फसलों की संभावित उत्पादकता में कमी आ गई है । मिट्टी की उर्वरता को बहाल करने और स्थायी फसल उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा धान - गेहूँ प्रणाली के विकल्प के रूप में जरूरत आधारित टिकाऊ और आर्थिक फसल प्रणालियां जो की फसलों की अवधि को ध्यान में रख कर चुनी गई है । वह इस प्रकार है ।

**सारणी 1 :** धान जया समतुल्य उपज भूमि उपयोग दक्षता रोजगार उपलब्धता और विभिन्न आर्थिक फसल प्रणाली

फसल प्रणाली	धान जया समतुल्य उपज (किं / हे०)	भूमि उपयोग दक्षता (प्रतिशत)	उत्पादन दक्षता (कि/हे० प्रति दिन)	रोजगार उपलब्धता (श्रमिक दिन/ वर्ष)
धान (जया) -गेहूँ (डब्ल्यू एच. 1105) -पडत जांच	124.53	70.90	48.08	163
धान (आई०ई०टी० -1410)-बरसीन (वरदान) चारा व वीज उत्पादन के लिए	133.39	88.70	41.17	215
धान (पी०सी० -19)-गेहूँ (डब्ल्यू एच. 1105) चारा (स्थानीय मक्का चवला चरी)	150.62	85.40	48.27	212
धान (आई०ई०टी० 1410)-आलू ( कुफरी वादशाह) - गेहूँ (पी०बी० डब्लू .373)	265.57	85.75	84.84	280



विभिन्न द्रश्य क्षेत्र गातिविद्वियां और फसलें

## संस्तुति

धान- गेहूं फसल चक्र के विविद्धिकरण के लिए 300 प्रतिशत फसल सघनता को जम्मू व कश्मीर के उपोषण क्षेत्र में जाचा गया जिससे 5000 से 30000 प्रति हेकटियर विभिन्न फसल प्रणाली में कुल लाभ हुआ है ।

### लाभ:

पहचाना गया फसल प्रणाली न केवल उत्पादकता व कुल लाभ को बढ़ाती है बल्कि इसी के साथ मर्दा की स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारता है ।

संपर्क वैज्ञानिक : डॉ० बी०सी०शर्मा, सस्य विज्ञान विभाग, एफओए, एसकेयूएसटी जम्मू चटठा

शीर्षक :- प्रभावशाली संसाधन उपयोग के लिए सीधे धान की बोवाई

धान की सीधी बोवाई रोपाई की तुलना में बीज फसल लगाने की प्रक्रिया है । धान की सीधी बुवाई करने पर निम्नलिखित कार्यों से बचा जा सकता है जैसे , नर्सरी लगाना, कट करना और रोपाई करना ।

### कार्यप्रणाली

1. खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करके पाटा लगा देना चाहिए ।
2. मानसून की शुरुआत से 10 से 15 दिन पहले उपयुक्त नमी में बीज की बुवाई ( 5 जून से 15 जून) करनी चाहिए ।
3. बोवाई के लिए 30 और 40 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर बासमती और मोटे वाले धान की किसमें का क्रमशः उपयोग करें ।
4. बैविस्टिन 2 ग्राम / किलोग्राम बीज की दर से बोवाई से पहले बीजों को उपचारित करें
5. बीजों को 3-4 सेमी की गहराई पर बीज सह उर्वरक - बीज ड्रिल द्वारा पंक्तियों में 20 सेमी के अंतरात पर बोना चाहिए ।
6. उचित खरपतवार प्रबंधन के लिए 500 लीटर पानी में पेन्डीमीथलिन 1 लीटर/हेक्टेयर (बोवाई के बाद) और 25-30 दिन के बुवाई के बाद 500 लीटर पानी में बिसपाईरीवेक 25-30 ग्राम/हेक्टेयर की दर से उपयोग करें ।

सरणी 1 तुलनात्मक अध्ययनपरम्परागत धान के बीज की सीधी बुवाई के0वी0के0 कटुआ

परम्परागत तकनीक	उपज (किं / हे0 )	लाभ लागत अनुपात (रू/रू)
परम्परागत धान	42.12	2.01
बीज की सीधी बुवाई	40.23	2.77



धान के बीज की सीधी बुवाई का क्षेत्र दृश्य के0वी0के0 कटुआ

सरणी 2: तुलनात्मक अध्ययन धान के बीज की सीधी बुवाई (बासमती 370 ) सस्य वज्ञान फार्म चटठा

परम्परागत तकनीक	उपज (किं/ हे0 )	लाभ लागत अनुपात (रू/रू)
परम्परागत धान	29.0	1: 2.63
बीज की सीधी बुवाई	28.5	1: 3.56



धान के बीज की सीधी बुवाई (बासमती 370 ) का क्षेत्र दृश्य सस्य विज्ञान फार्म चटठा

संस्तुति

वर्तमान समय में मजदूरों की कमी को देखते हुए धान की सीधी बुवाई करना ही एक बेहतर विकल्प है क्योंकि इस तकनीक के अनुसार उपज के परिणामों में वृद्धि होती गयी तथा इसी के साथ ही परम्परागत विधि से लगाये गए धान की तुलना में शुद्ध लागत लाभ में वृद्धि देखी गयी है ।

लाभ :

- 1 श्रमिकों के अभाव में सीधी बुवाई समय पर की जा सकती है ।
- 2 करीब 15-20 फीसदी पानी की बचत होती है ।
- 3 फसल 7-15 दिन पहले परिपक्व होती है और इस प्रकार आगामी फसलों की समय पर बुवाई में मदद मिलती है ।
- 4 तुलनात्मक रूप में पर्यावरण के अनुकूल और ईंधन की खपत लगभग 60 प्रतिशत बचाता है ।
- 5 मिट्टी की संरचना में सुधार होता है
- 6 पैदावार तुलनात्मक रूप में रोपाई वाले धान के बराबर होती है 5000-6000रूपये / हेक्टेयर की बचत होती है ।

संपर्क वैज्ञानिक :-डॉ० बी० सी० शर्मा, डॉ० आर. पुनिया सस्य विज्ञान विभाग, एफओए, एसकेयूएसटी जम्मू चटठा और डॉ.अमीरश वैद (वरिष्ठ वैज्ञानिक) के.वी.के., कठुआ

## शीर्षक :-गेहूं में शून्य भूपरिष्करण तकनीक

शून्य भूपरिष्करण न्यूनतम भूपरिष्करण का एक चरम रूप है जहां प्राथमिक भूपरिष्करण को पूरी तरह से टाला जाता है और द्वितीयक भूपरिष्करण को केवल पंक्ति बीज शेर्या में बीज शेर्या की तैयारी तक सीमित रख जाता है । शून्य भूपरिष्करण मशीन एक आपरेशन में तीन कार्यों को पूरा करती है

- 1 मृदा सतह को खोलना
- 2 बीज व उर्वरकों को डालना
- 3 बीजों व उर्वरकों पर मिटटी की परत चढाना

### कार्यप्रणाली

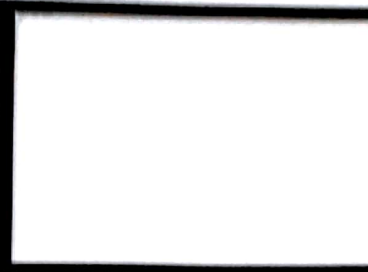
- 1 120-130 किलोग्राम बीज/ हेक्टेयर का प्रयोग करें ।
- 2 बीज को 4-5 सेमी की गहराई और 20 सेंटीमीटर की दूरी पर बनाई गई पंक्तियों में बोना चाहिए ।
- 3 खरपतावार प्रबंधन के लिए सलफोसल्फूरान +मेटसलफूरान 30 ग्राम + 2 ग्राम प्रति हे0 या कलोडीनापाक+मेटसल्फूरान 60 ग्राम प्रति हे0 30-35 दिनों पर 500 लीटर पानी में गेहूं की फसल की बुवाई के प्रयोग करें ।

सारणी 1 :-भूपरिष्करण प्रणाली का दाने की उपज पर प्रभाव व उगया गया गेहूं , सस्य विज्ञान अनुसांधान फार्म चटठा

भूपरिष्करण प्रणाली	दाना उपज (डब्ल्यू एच- 1105) (कि/ हे)	लाभ लागत अनुपात (रू/रू)
शून्य भूपरिष्करण	42.44	1: 2.12
परमपरागत भूपरिष्करण	40.96	1: 1.55



Zero seed cum ferti-drill in operation



Zero till wheat crop at heading



Zero till established wheat crop

सारणी 2 :-भूपरिष्करण प्रणाली का दाने की उपज पर प्रभाव व उगया गया गेहूं, के०वी०के० कटुआ

भूपरिष्करण प्रणाली	दाना उपज (एच.डी.-3086) (कि/ हे)	लाभ लागत अनुपात (रु/रु)
शुन्य भूपरिष्करण	42.54	1: 3.02
परमपरागत भूपरिष्करण	43.27	1: 2.61



शुन्य भूपरिष्करण से लगाया गया गेहूं का क्षेत्र दृश्य (के०वी०के० कटुआ)

संस्तुति

विशेष रूप से बासमती धान गेहूं फसल चक्र में गेहूं की बुवाई की सुविधा प्रदान करने के लिए भूपरिष्करण जुताई तकनीक बेहतर विकल्प है क्योंकि इस तकनीक से पैदावार के नतीजे उत्तम होते हैं और न केवल परंपरागत रूप से बोए गए गेहूं के बराबर, बल्कि लाभ लागत अनुपात भी बेहतर पाया गया है।

लाभ :

- 1 गेहूं की बुवाई सामान्य समय पर हो जाती है ।
- 2 गेहूं की परम्परागत विधि से बुवाई की गयी विधि के समान होती है और देर से बुवाई की  में परम्परागत विधिसे 3 से 5 क्विंटल प्रति/ हे उपज अधिक प्राप्त होती है ।
- 3 पारिस्थितिकी की रूप से सुरक्षित है क्योंकि ईंधन के आकार में उर्जा की बचत करने के साथ ही 3000 रु/ हे के हिसाब के खेत की लागत कम को कम करता है ।
- 4 मिट्टी में पोषक तत्वों का प्रति धारण और पुनः चकण की दर को  है ।

संपर्क वैज्ञानिक : डॉ० बी० सी० शर्मा, डॉ० आर. पुनिया सस्य विज्ञान विभाग, एफओए, एसकेयूएसटी जम्मू चटठा और डॉ.अमीरश वैद (वरिष्ठ वैज्ञानिक) के.वी.के., कठुआ

**शीर्षक :- धान में सफल निवेश उपयोग के लिए धान की गहनता पद्धति (एस, आर, आई)**

सभी फसलों के बीच, सिंचित कम भूमि पारिस्थितिकी के तहत लगभग 79 मीटर धान सिंचाई प्राप्त करता है, जो विश्व स्तर पर धान के उत्पादन में 75 प्रतिशत योगदान देता है । अनुमान है कि एक किलो धान पैदा करने के लिए धान को लगभग 3000-5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है ।

धान की फसल विशेष रूप से बासमती (बासमती -370) जम्मू के सिंचित मैदानों में खरीफ के दौरान सबसे अधिक पारिश्रमिक फसल है । जैविक कार्बन के साथ - साथ दोषपूर्ण प्रबंधन प्रथाओं में कमी और बासमती की सुगंध में कमी हों रही है । बासमती और सिस्टम ऑफ राइस इंटेसिफिकेशन (SRI) की स्थिर उत्पादकता के मुद्दे को हल करने के लिए नए दृष्टिकोणों की संख्या एक ऐसा ही उभरता हुआ विकल्प हो सकता है । इस पद्धति में भूमि पूजा और पानी की उत्पादकता में सुधारा करने की क्षमता है । यह प्रणाली 1980 में दशक में मेडागास्कर में विकसित हुई और दुनिया भर में एक मिलियन से अधिक किसान विधि का अभ्यास कर रहे हैं ।

**एस, आर, आई क्या है**

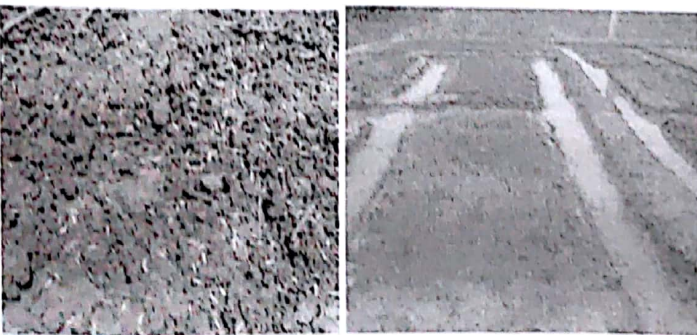
धान गहनता की प्रणालीमूल रूप से प्रथाओं के एक विशेष समूह को संदर्भित करती है जो पौधों के स्वास्थ्य और उपज में सुधार करती है । इसमें संयंत्र, मिट्टी, पानी और पोषक तत्व प्रबंधन के लिए प्रथाओं का एक संग्रह है ।

**परम्परागत विधि की तुलना में गहनता पद्धति के लाभ**

- एसआरआई में खेती की लागत कम है लेकिन शुरू में इसे रोपाई के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता होती है । कम बीज दर, कम पानी की आवश्यकता , कम उर्वरक और कोई खरपतवार नियन्त्रण यांत्रिक (कोनो) निराई से खेती की लागत कम हो जाती है ।
- नर्सरी से आसानी से पौधों को □□□ □□ □□□□□□□□ ओर 7-10 दिनों की प्रारंभिक परिपक्वता के कारण समय की बचत होती है ।
- एसआरआई कार्यप्रणाली के लिए कम रासायनिक इनपुट की आवश्यकता होती है और जैविक खादों के उपयोग पर जोर दिया जाता है , जिससे रासायनिक इन पुट के बुरे प्रभावों को नकार दिया जाता है । एसआरआई मृदा के सूक्ष्म जीवों में स्वास्थ्य में सुधार करता है क्योंकि वायू संचरण कोनोवीडरके माध्यम से सुधार किया जाता है , जिससे मिट्टी की स्थूल और सूक्ष्म जीवों की संख्या में सुधार होता है ।
- एसआर आई सिंचाई के पानी को बचाता है क्योंकि वैकल्पिक रूप से गीला और सूखा चक्र का अभ्यास किया जाता है ।
- धान के लिए बचाए गए पानी को प्रभावी रूप से धान या अन्य सिंचित शुष्क फसलों के तहत फसल को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है ।

### एसआरआई की विस्तार पद्धति

#### रोपाई और नर्सरी प्रबंधन

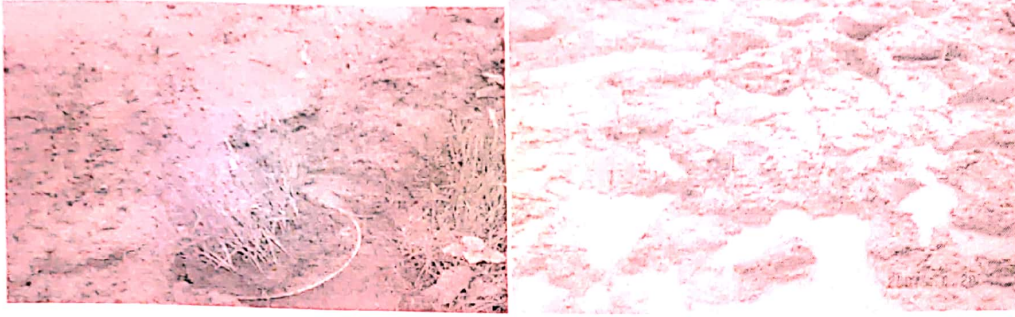


- क्षेत्र एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 100 वर्गमीटर नर्सरी क्षेत्र की आवश्यकता होती है
- गोबर की खाद के साथ 4 X 1.25 वर्गमीटर आकार के नर्सरी बेड और एक कनाल क्षेत्र के लिए 2:1 अनुपात में मिट्टी का मिश्रण तैयार करें ।



- मेड़ और चैनलों के साथ नर्सरी बेड को उंचाई में 12.5-15 सेंटीमीटर उपर उठाया जाना चाहिए । मुख्य क्षेत्र के पास बेड तैयार किया जाना चाहिए ।
- 400 ग्राम प्रति केनाल धान के बीज जो पूर्व अंकुरित होना चाहिए , छिड़काव की विधि के माध्यम से बोया जाना चाहिए और गोबर की खाद एवं मिटटी के मिश्रण के साथ कवर किया जाना चाहिए।
- बेड को रोज दो बार गुलाब की केन के माध्यम से सिंचाई करें ।

मुख्य क्षेत्र , नर्सरी को उखाडने और रोपाइ की तैयारी



एसआआई नर्सरी

मिटटी से उखाडती नर्सरी

25x25 सेमी की दूरी पर रोपाई के बाद एसआरआई फील्ड होंगे ।

- फील्ड समतल किया जाना चाहिए । रोपाइ से पहले पोखर और खडे पानी को बाहर निकलना चाहिए
- रोपाई के वर्गाकार रोपाई की सुविधा के लिए 25 सेमी की दूरी के साथ चिनिहत किसी भी रस्सी का उपयोग करें @ 16 रोपाई प्रति वर्ग मीटर
- रोपाई 8-12 दिन पुरानी रोपाई (2-3 पत्ती अवस्था) अंकुरित जड़ों के बिना बीज और मिटटी के साथ अंकुर प्राप्त करने के लिए बीज को नीचे डालने से नर्सरी को स्टील प्लेट के माध्यम से उखाडना चाहिए
- मिटटी के साथ एकल अंकुर को 25 सेमी की दूरी पर उथले गहराई पर धीरे से प्रत्यारोपित किया जाना चाहिए । उखाडने और रोपाई के बीच का अंतराल न्यूनतम होना चाहिए (एक घंटे से अधिक नहीं )

जलप्रबंधन



- पौध को सिंचाई 2-2.5 सेमी सिंचाई आवश्यकता अनुसार करनी चाहिए
- कटाई से 15 दिन पूर्व 2.3 सेमी पानी को नियंत्रण करना चाहिए
- खरपतवार प्रबंधन करते समय पानी की एक पतली परत होनी चाहिए के लिए भरे हुए पानी को बाहर निकाल देना चाहिए

#### पोषक तत्व प्रबंधन

- अनुशंसित आधे नाइट्रोजन और कुल फास्फोरस और पोटैश को गारा बनाने से पहले प्रयोग करें
- दूसरी 20 दिन रोपाई के बाद नाइट्रोजन की दूसरी खुराक का प्रयोग करें
- जैविक स्रोतों के विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया जाना चाहिए । यह हानिकारक पौधे परजीवी की आबादी को दबाने और लाभकारी माइक्रोबियल के को बढ़ावा देने में मदद करता है ।
- जैविक खाद के विभिन्न स्रोतों के माध्यमक में नाइट्रोजन की अनुशंसित खुराक की आपूर्ति करने के लिए जैविक खादों की मात्रा को इस तरह से समायोजित किया जा सकता है ।

#### खरपतवार प्रबंधन

खरपतवार के समावेश के माध्यम से पोषक तत्वों को फिर से भरने में मदद करने से , वायु संचरण और माइक्रोबियल गतिविधि में वृद्धि हुई , जिससे पौधे के साथ - साथ मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ ।

रोपाई के बाद 10-12 दिनों में उथले खडे पानी के साथ



पहली निराई और 10-12 दिनों के अंतरात पर न्यूनतम 3 खरपतावार की आवश्यकता होती है ।

कोनों वीडर



खडे पानी में कोनों वीडर से -निराई- गुडाई



कोनों वीडर से -निराई- गुडाई के बाद

जम्मू में एस आरआई की स्थिति

एसआरआई की शुरुआत खरीफ, 2005 में SKUAST-J के रिसर्च फार्म , AICRP(राइस)के माध्यम से चटठा चावल अनुसंधान निदेशलय, हैदराबाद से की गई । SRI शोध परीक्षण से प्राप्त सकारात्मक परिणाम फिलीप के रूप में काम करते हैं और दो बाहय वित्त पोषित परियोजनाएं जम्मू जिले से छह अलक - अलग स्थानों/गांवों में, WWF-ICRISAT , हैदराबाद से खरीफ, 2007 और खरीफ , 2008 में वित्त पोषण के साथ पूरी हुई । व्यापक रूपरेखा और एसआरआई पर बाहय वित्त पोषित परियोजनाओं की उपलब्धियां नीचे दी गई है ।

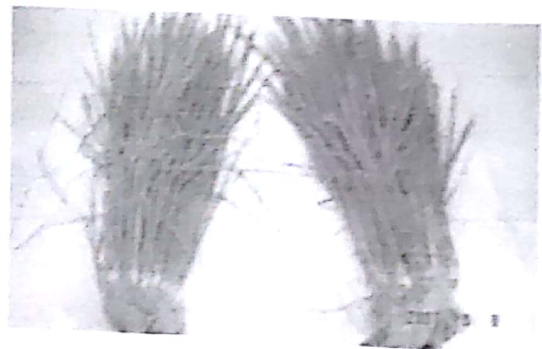
उपलब्धियां

- जम्मू जिले के छह स्थानों पर एसआरआई का प्रदर्शन किया गया ।
- 8 किलोग्राम/ हेक्टेयर की दर से बीज मानकीकृत किया गया

- 12-14 दिनों के अंकुर का मानकीकरण किया ।
- बगल में हरी खाद/FYM/ अन्य जैविक प्रोत्त(अनुशासित नाईटेजन 50%) अनुशासित उर्वरक खुराक को मानकीकृत किया गया ।
- एकल दिशा में दो बार कोनोवीडग आयोजित किया गया था
- परिणाम में एसआरआई के तहत चावल की पैदावार ( कल्टीवेटर पीसी -19 , एक शरबती एचवाईवी) में औसतन 49% की वृद्धि देखी गई । 2 साल में, वास्मती -270 में 22.5% औसत वृद्धि दर्ज की गई ।
- एसआर आई पर एक क्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया और इसमें माननीय कुलपति SKUAST-Jammu, कृषि विभाग के कर्मचारी J&K क्षेत्र के अधिकारी और लगभग 150 किसान शामिल हुए ।
- दुसरे वर्ष में, गांव मोटा में लगभग 26 एकड़ क्षेत्र में किसान आधार पर एक और परियोजना लागू की । आरएसपुरा, जम्मू ।
- त्रिपुरा के अगरतला में दो मास्टर ट्रेनर्स SRI के दूसरे राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल हुए ।
- एसआरआई पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन और कृषि उत्पादन आयुक्त , सरकार, द्वारा भाग लिया गया था । जम्मू और कश्मीर , माननीय कुलपति , SKUAST-जम्मू , कृषि विभाग , जम्मू के निदेशक । जम्मू और कश्मीर , क्षेत्र के अधिकारी और लगभग 250 किसान ।

एसआरआई के साथ किसानों के खेतों में परिणाम

गांव का नाम	उपज पारंपरिक तरीके से बढ़ी%
चटठा	48%
खंडवाल	45%
गिडार गैलियन	50%
बड्याल ब्राहमण	50%
मोटा	60%
प्रदर्शनों का डेटा (खरीफ 2007) कल्टीवर्स: पीसी-19 और शरबती	



प्रोफ्यूज टिलरिंग (PC-19)

## एसआरआई में पानी की बचत

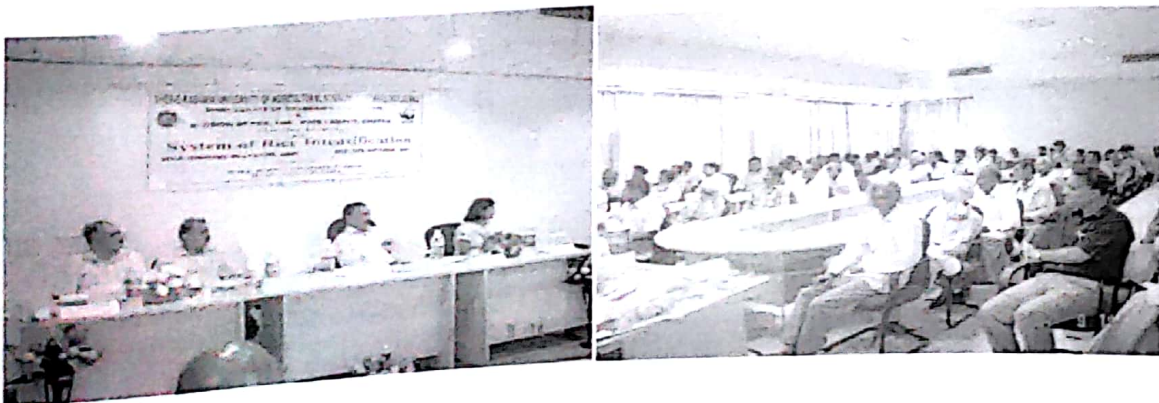
गंव का नाम	परम्परागत विधि में प्रयुक्त पानी	एसआरआई जल में प्रयुक्त	जल बचाया(%)
चटठा	14877 धन मीटर हे0	10565 धन मीटर हे0	28,98
खंडवाल	15235 धन मीटर हे0	11345 धन मीटर हे0	25,53
गिदेर गैलियन	15753 धन मीटर हे0	11423 धन मीटर हे0	27,49
बद्याल ब्राहमण	15802 धन मीटर हे0	11654 धन मीटर हे0	26,25
मोटा	15487 धन मीटर हे0	11395 धन मीटर हे0	26,42
सिंचाई + वर्षा = कुल पानी का उपयोग			

## संस्तुति

आईटम	परम्परागत विधि	श्री पधति	बचत
बीज	30 किग्रा (बासमती) 40 किग्रा कोर्स	8 किग्रा	60-80%
खरपतवारनाशी	30 किग्रा बयूटाक्लोर	नहीं,	100% निराई करें ।
सिंचाई पानी	14000-16000 धनमीटर / हेक्टेयर	9000-11500 धनमीटर / हेक्टेयर	25-30%
समय	सभी किस्में उनके जीवनचक्र के अनुसार परिपक्व होती है	सभी किस्में 7-10 दिनों की पारंपरिक विधि की तुलना में	7-10 दिन पहले परिपक्व होती है
उपज	सभी किस्में की अपनी क्षमता के अनुसार यील्ड दर्ज की गई ।	सभी किस्में में सकारात्मक	

		परिणाम 25-45% बासमती और गैर बासमती पाया गया ।	
--	--	--	--

- SRI को हर जगह नहीं अपनाया जा सकता है । यह कमांड क्षेत्र में उपयुक्त नहीं हो सकता है , जहां विशेष रूप से खरीफ मौसम के दौरान अनियंत्रित जल स्थितियों के तहत पानी की रिहाई अत्यधिक अनिश्चित और कम भूमि में होती है ।
- एसआरआई कुशल और ज्ञान गहन कार्यप्रणाली होने के कारण किसानों की पूर्ण भागीदारी की आवश्यकता है । सीमांत किसानों में एसआरआई की सभी कार्रवाई शामिल हो सकती है , एसआरआई के उपयुक्त लाभार्थी सीमांत किसान होने चाहिए ।
- एसआरआई पद्धति में जैविक खादों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि यह मिट्टी में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्व को बढ़ाता है , मिट्टी को क्षरण और अन्य खतरनाक प्रभावों से बचाता है ।
- निराई एसआरआई को अपनाने में प्रमुख बाधाओं में से एक है । कोनो वीडर की उपलब्धता एक अनिवार्य घटक है , क्योंकि यह न केवल निराई के लिए मदद करता है, बल्कि कार्बनिक पदार्थों और वायु संचरण को बढ़ाने के लिए मिट्टी में कार्य करता है ।
- एसआरआई बीज गुणन के लिए सबसे उपयुक्त है क्योंकि प्रारंभिक बीज की आवश्यकता छोटी होती है और एकल अंकुर और चोड़ी जगह पर रोपण करना आसान होता है ।



श्री पद्यति पर कार्यशालाएसकेयूएसटी-जम्मू कृषि विभाग व वैज्ञानिक व किसान



फसल सघनताक्षेत्र भ्रमण किसान कृषि विभाग व वैज्ञानिक एसकेयूएसटी-जम्मू



फसल सघनता क्षेत्र भ्रमण किसान कृषि विभाग व वैज्ञानिक एसकेयूएसटी-जम्मू

संपर्क वैज्ञानिक : डॉ, अनुराधा शाह , डॉ ,विजय भारती शस्य विज्ञान विभाग, एफओए, एसकेयूएसटी जम्मू चटठा(वरिष्ठ वैज्ञानिक,)

### खरपतवारप्रभावित भूमि कायाकल्प

लैटाना कैमारा दक्षिण और मध्य अमेरिका का एक विदेशी खरपतवार है जो व्यापक रूप से एक सजावटी पोधे के रूप में पेश किया गया था और अब यह दुनिया भर में 50 से अधिक देशों में एक मुख्य खरपतवार हो गया है। भारत के सभी अधिकांश हिस्सों पर मुख्य रूप से जम्मू क्षेत्र सहित मध्यवर्ती और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। यह घने रूप में पाया जाता है जो प्राकृतिक समुदायों को विस्थापित करता है और चरागाह भूमि की क्षमता को कम करता है। लैटाना एक अत्यधिक परिवर्तनशील प्रजाति है इसकी सैकड़ों प्रकार की प्रजाति होती है जो पर्यावरणीय परिस्थितियों को आसानी में सहन कर लेती है।



संस्तुति



वर्तमान समय में मजदूरों की कमी को देखते हुए धान की सीधी बुवाई करना ही ऐ वेहतर विकल्प है क्योकि इस तकनीक के अनुसार उपज है परिणामों में वृद्धि होती गयी तथा इसी के साथ ही परम्परागत विधि से लगाये गए धान की तुलना में कुल लागत लाभ में वृद्धि देखी गयी ।